समुराई की बेटी

समुराई की बेटी

बहुत समय पहले जापान के पूर्वी तट पर एक महान समुराई रहता था जो अपना अधिकांश समय, जापान के सम्राट की सेवा में, राज्य में यात्रायें करते हुए बिताता था. वह विधुर था और बचे हुए समय में अपनी सुंदर बेटी टोकोयो की देखभाल करता था.

यद्यपि टोकोयो एक लड़की थी, उसके पिता ने उसे समुराईयों के सद्गुण, साहस, सहनशीलता और अनुशासन, सिखाये थे. उसने बेटी को शिक्षा दी थी कि निर्बल की रक्षा करना एक योद्धा का परम कर्तव्य होता है. जब वह पाँच वर्ष की हुई तो पिता ने उसे तीर चलाना और घोड़े की सवारी करना सिखाया.

लेकिन जब वह थोड़ी बड़ी हो गयी तो उसके पिता ने सोचा कि बेटी को एक सभ्य महिला की तरह व्यवहार करना भी सीखना होगा. अध्यापिकाएं उसे सही आचरण और पहनावे की शिक्षा देने लगीं, कवितायें लिखना, नृत्य करना और वीणा बजाना सिखाने लगीं.

अपनी सेविका, कूमा, से लड़की ने एक बार शिकायत की, “काश मैं लड़कों की भांति रह पाती! वह शिकार करने जाते हैं, घुड़सवारी और तीरंदाजी की प्रतियोगिता करते हैं.”

कूमा ने प्यार से लड़की को झिड़का, “एक लड़की के लिए ऐसी कामना करना मूर्खता ही है.”

लेकिन यह सिद्ध करने के लिए कि एक समुराई समान वह भी शूरवीर और साहसिक थी, वीरता और साहस का प्रदर्शन करने का कोई अवसर वह न चूकती थी. अपने कुलीन जन्म के बावजूद अपना अधिकांश समय वह महिला ग़ोताख़ोरों के संग बिताती थी. आदमियों की तुलना में ठंडा पानी सहने और फेफड़ों में अधिक हवा भरने में वह औरतें ज़्यादा सक्षम थीं. इसलिए वह सागर तल से एबालोन, मुक्ता सीप और अन्य घोंघे निकाल कर लाती थीं.

सुबह-सुबह छोटी नावों का चला कर सागर के अंदर जाना, फिर एक हाथ में चाकू पकड़े पानी में डुबकी लगना, चट्टानों में छिपे सीपों और एबालोन को कुरेदना और पीठ पर बंधी टोकरी को इनसे भर देना टोकोयो को अच्छा लगता था.

कभी-कभी उसे विशाल सीप मिल जाते थे जिनके भीतर इतने बड़े मोती होते थे जिन्हें चमका कर और काट कर बाउल और रकाबी बनाई जा सकती थी. लेकिन इसमें खतरा भी था. एक बार एक शार्क नावों के नीचे धीमे-धीमे तैरने लगी थी, शार्क से बचने के लिए टोकोयो एक चट्टान के पीछे छिप गयी थी. जब तक शार्क खुले सागर की ओर वापस लौटी, उसका दम घुटने लगा था. उसे लगा था कि उसके फेफड़े फट जायेंगे.

वसंत के एक दिन जब टोकोयो अठारह वर्ष की थी, एक मित्र के साथ तट पर खड़ी, सुबह लाई हुई सीपों और एबालोन को वह साफ़ कर, बांस की चटाई पर सुखाने के लिए रख रही थी.

तट पर पिता को अपनी ओर आते देखकर वह आश्चर्यचकित हो गई. उन्होंने दरबारियों का परिधान पहना था और सिर पर काले रंग के कड़े कपड़े की टोपी थी. उनके दोनों ओर एक-एक सिपाही था.

प्रसन्नता से चिल्लाते हुए वह पिता की ओर भागी, “पिताजी, मुझे लगा था कि आप अभी कई दिनों तक यात्रा पर रहेंगे.”

पिता निराशा से मुस्कराये. “मैंने अपने सम्राट को क्रोधित कर दिया है. उन्होंने मुझे पश्चिमी सागर में, पहाड़ों के दूसरी ओर, ओकी द्वीप पर निर्वासित कर दिया है.”

“लेकिन आप तो उनके सबसे स्वामिभक्त सामंत हैं!” टोकोयो ने आपत्ति की.

“लंबे समय से उनका मन एक अनोखे विकार से ग्रसित है,” पिता ने कहा. “अपने सबसे समर्पित सामंतों और मंत्रियों से भी वह भयभीत रहते हैं. मेरे से पहले उन्होंने कुछ और लोगों को भी निर्वासित किया था. अगर उनका रोग ठीक हो जाए तो उन्हें अपनी भूल का अहसास हो जाएगा. लेकिन वह मेरे सम्राट हैं. मैं उनका वफादार सामंत हूँ. मुझे उनके आदेश का पालन करना ही होगा.”

पिता और बेटी अंतिम बार एक-दूसरे के गले लगे. चूंकि वह एक समुराई की बेटी थी इसलिए अपने पिता के सम्मान में टोकोयो ने अपने दुःख को छिपाने का पूरा प्रयास किया. लेकिन उसकी आँखों से आंसू बहने लगे, यद्यपि न ही पिता और न ही बेटी ने स्वीकार किया कि वह रो रही थी.

जब सिपाही उसके पिता को ले गये तो उसने गुस्से से अपने आँसू पौंछ दिए जो अनचाहे ही बहने लगे थे.

कई सप्ताहों तक टोकोयो घर की दीवारों के पीछे बंद रही. वह सुबह से शाम तक अपने किमोनो की आस्तीन में मुँह छिपा कर रोती और कमरे में घूमती रहती.

ग्रीष्म ऋतु आने तक पिता से दूर रहना उसके लिए असहनीय हो गया. उसने अपने निर्वासित पिता के पास जाने का निश्चय किया. मैं एक समुराई की बेटी हूँ, उसने सोचा, और मुझे वहाँ जाना चाहिए जहाँ मेरी निष्ठा मुझे जाने के लिए प्रेरित कर रही है. मुझे विश्वास है कि मेरा साहस मुझे वहाँ पहुँचा देगा.

टोकोयो के घर से जाने से पहले रात्रि में कूमा ने उसे एक बाँस का छोटा सा पिंजरा दिया जिसके अंदर एक झींगुर गा रहा था.

“यह बहुत प्रसन्न है!” लड़की ने कहा, वह आश्चर्यचकित थी कि संसार में प्रसन्नता अभी बची थी.

“यह तुम्हारे लिये भाग्यशाली होगा,” बूढ़ी औरत ने कहा.

“मैं एक दिन वापस आऊँगी,” टोकोयो ने कहा, कूमा के व्यवहार से वह द्रवित हो गई थी. उसने बूढ़ी को गले लगाया और कहा, “पिता को घर लाने का कोई न कोई उपाय मैं अवश्य ढूँढ़ निकालूंगी. परिवार का यश और सम्मान मैं अवश्य लौटा लाऊँगी.”

उसने अकेले यात्रा करने का निर्णय किया, एक किसान की तरह- गर्मी और सर्दी से बचने के लिए फूस का बना खुरदरा लबादा ओढ़े और लकड़ी की खडाऊं पहनी. सिर पर उसने तिनकों का बना हैट भी पहना. झींगुर, अपने पूर्वजों की कटार और एक थैले में सूखी मछली उसने साथ ले ली.

अगले दिन वह पहाड़ों के पार, पश्चिमी सागर के तट की ओर चल दी. उस सागर को पार कर वह ओकी द्वीप जायेगी, जहाँ उसके निर्वासित पिता रहते थे.

उसकी यात्रा कठिन साबित हुई. दो बार उसे उन लुटेरों से बचने के लिए छिपना पड़ा जो मार्ग पर यात्रियों को लूटते थे. लेकिन उसके साहस ने, पिता से मिलने की आशा ने और झींगुर के गीत ने उसका उत्साह घटने न दिया.

अंतत: वह सागर तट पर मछुआरों के एक छोटे से गाँव में पहुँची. लेकिन जब उसने लोगों से कहा कि उसे नाव से सागर पार ओकि द्वीप ले जाएँ तो उन्होंने मना कर दिया.

“सम्राट का आदेश है कि उनकी अनुमति के बिना कोई भी वहाँ नहीं जा सकता,” एक आदमी ने कहा.

“गर्मियों में भी आंधी और लहरों के कारण छोटी नाव में वहाँ जाना खतरनाक होता है,” एक औरत ने कहा.

“एक डूबे हुए जंगी जहाज़ का प्रेत वहाँ सागर में घूमता रहता है,” एक बूढ़े मछुआरे ने कहा.

“मुझे फिर भी वहाँ जाना है,” लड़की ने कहा.

सारे बचे हुए पैसे खर्च कर के उसने एक हल्की, तेज़ गति से चलने वाली नाव खरीदी जिसमें बैठ कर वह सागर पार अपने पिता के पास जा सकती थी. मछुआरों ने निराशा में अपने सिर हिलाये क्योंकि उन्हें संदेह था कि निर्वासित लोगों के द्वीप, जिसे खोपड़ी के आकार की एक चट्टान चिह्नित करती थी, वह शायद ही पहुँच पाए.

भोर होते ही लड़की सागर पार चल दी. नाव में खड़े होकर वह स्थिरतापूर्वक चप्पू आगे-पीछे चलाती रही, वैसे ही जैसे गोताखोर औरतों ने उसे सिखाया था. उसके लबादे के नीचे झींगुर अपना गीत गा रहा था.

विश्राम करने के लिए वह थोड़े समय के लिए ही रुकी. वह नाव चलाती रही जब तक कि अँधेरा न हो गया. पूर्णिमा का चाँद सागर की लहरों को प्रकाशित कर रहा था. यद्यपि वह थक गई थी परन्तु उसे विश्वास था कि शीघ्र ही अपने पिता से उसकी भेंट होगी.

अचानक उसके झींगुर ने गाना बंद कर दिया. लड़की ने एक प्रेतरूपी, सफ़ेद जंगी जहाज़ को, बिना आवाज़ किये, तेज़ी से लहरों पर तैरते हुए अपनी ओर आते देखा. अलौकिक हवा से भरे हुए विशाल सफ़ेद पाल और उठते-गिरते चप्पुओं की कतारें द्रुत गति से जहाज़ को उसके निकट ला रही थीं.

उसे अहसास था कि इस प्रेत-जहाज़ से बच कर वह आगे न जा सकती थी. इस विनाशकारी विपत्ति का सामना करने के लिए टोकोयो बहादुरी से खड़ी हो गई, “मैं एक समुराई की बेटी हूँ!” उसने चिल्लाकर कहा.

तभी कई प्रेत-योद्धा जहाज़ से बाहर झुक गये, उनके विवर्ण हाथ उसे पकड़ने के लिए आगे बड़े. उनसे लड़ने के लिए लड़की ने अपना चप्पू ऊपर उठा लिया. लेकिन वह डरावना जहाज़ धुंध समान उसके ऊपर से निकल कर कहीं लुप्त हो गया. वह सागर में अकेली रह गई.

कुछ समय बाद वह ओकी द्वीप पहुँच गई. चाँद के प्रकाश में उसने देखा कि सबसे निकट द्वीप पर एक विशाल चट्टान थी जिसका आकार एक खोपड़ी जैसा था. टोकोयो समझ गई कि वह अपने गन्तव्य पर पहुँच गई थी.

आशा से भरी हुई टोकोयो ने देवदार के पेड़ों के झुंड के निकट अपनी नाव को किनारे लगाया. वहाँ उसे तालियों और किसी के रोने के आवाज़ सुनाई दी.

झींगुर के पिंजरे को तह किये हुए अपने लबादे के नीचे रख कर वह चुपचाप पेड़ों के बीच से चल दी. वह एक जगह पहुँची. वहाँ उसने एक उदास वृद्ध को देखा जिसने पादरी की सफ़ेद रंग की पोशाक पहन रखी थी. उसके पास लगभग पन्द्रह वर्ष की सुंदर लड़की थी. उसने भी सफ़ेद पोशाक पहनी थी और वह रो रही थी. स्त्री होने के कारण लड़की के आंसू देख कर टोकोयो द्रवित हो गई, समुराई होने के कारण उनकी सहायता करना उसका कर्तव्य था.

स्वर्ग के देवताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए पादरी ने फिर से ताली बजाई और प्रार्थना करने लगा. अंततः वह सुबकती हुई लड़की को चट्टानी किनारे के पास ले गया. वह लड़की को नीचे पानी में धकेलने ही वाला था कि टोकोयो कूद कर उनके पास आई और उसने लड़की को पीछे खींच लिया.

वृद्ध आश्चर्यचकित हो गया, परन्तु क्रोधित न हुआ. “तुम्हारे व्यवहार से लगता है कि तुम इस द्वीप पर एक अजनबी हो. अन्यथा तुम्हें पता होता कि यह विषादपूर्ण कृत्य मुझे और यहाँ के सब लोगों को बहुत दुःखी कर देता है.

“एक दुष्ट पिशाच का कोप हम पर है, एक विशाल सफेद सांप जो सागर के तल पर रहता है. हर वर्ष एक युवा लड़के या लड़की का बलिदान वह हम से माँगता है. अगर हम उसकी मांग न माने तो वह क्रोधित हो जाता है और सागर में तूफ़ान पैदा करता है और हमारे कई मछुआरे डूब जाते हैं.”

टोकोयो ने कहा, “इस बच्ची को जाने दो, ओह पादरी! मैं एक समुराई की बेटी हूँ और मेरा कर्तव्य है कि मैं निर्बल की सहायता करूँ. मेरा निवेदन है कि मैं उस दुःखी लड़की की जगह लेना चाहती हूँ.”

जब वृद्ध ने उसकी बात स्वीकार कर ली, टोकोयो वीरता से पानी के किनारे आ गई. उसने अपनी कटार अपने दांतों से दबा कर पकड़ ली और सागर में कूद गई.

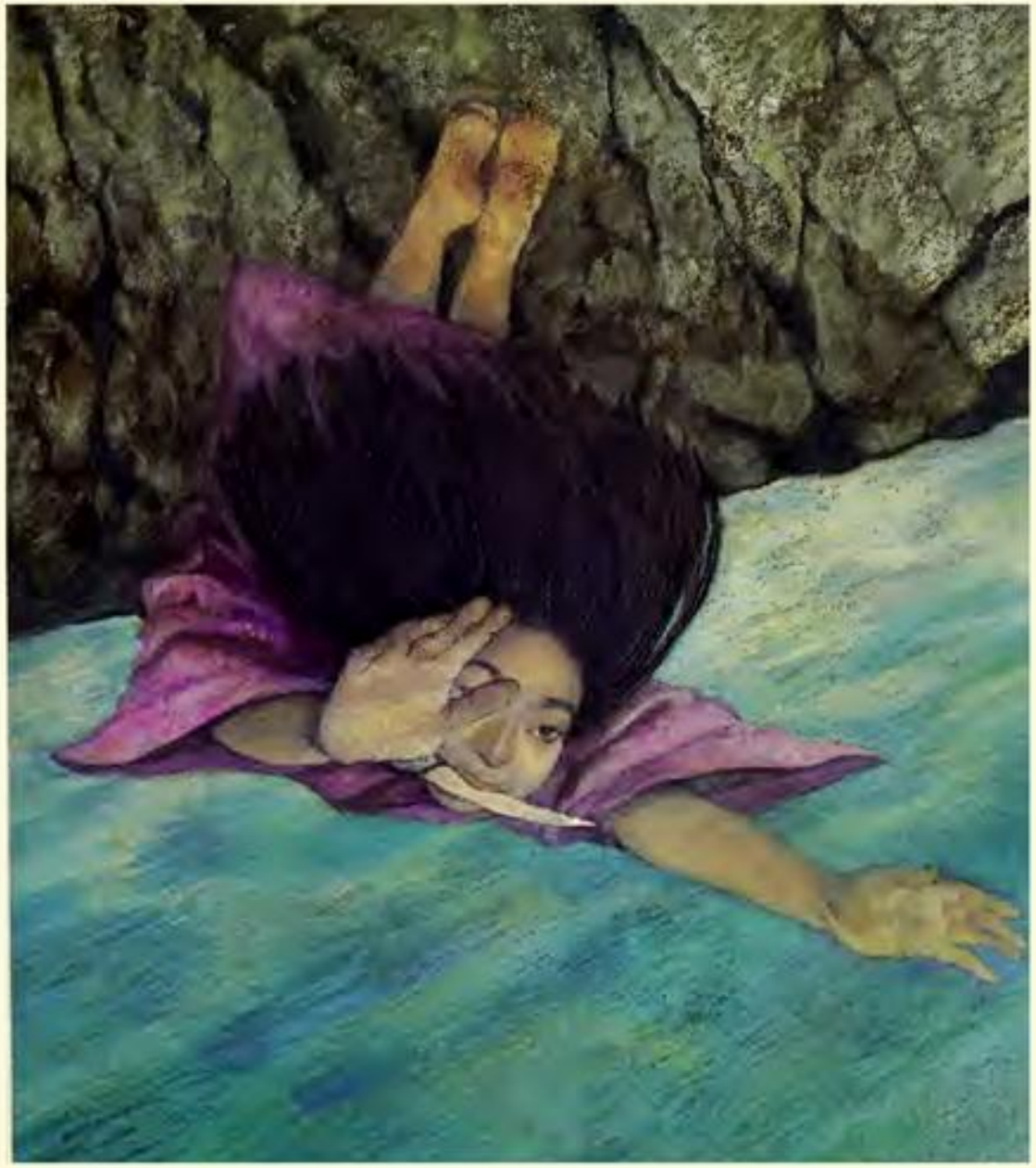

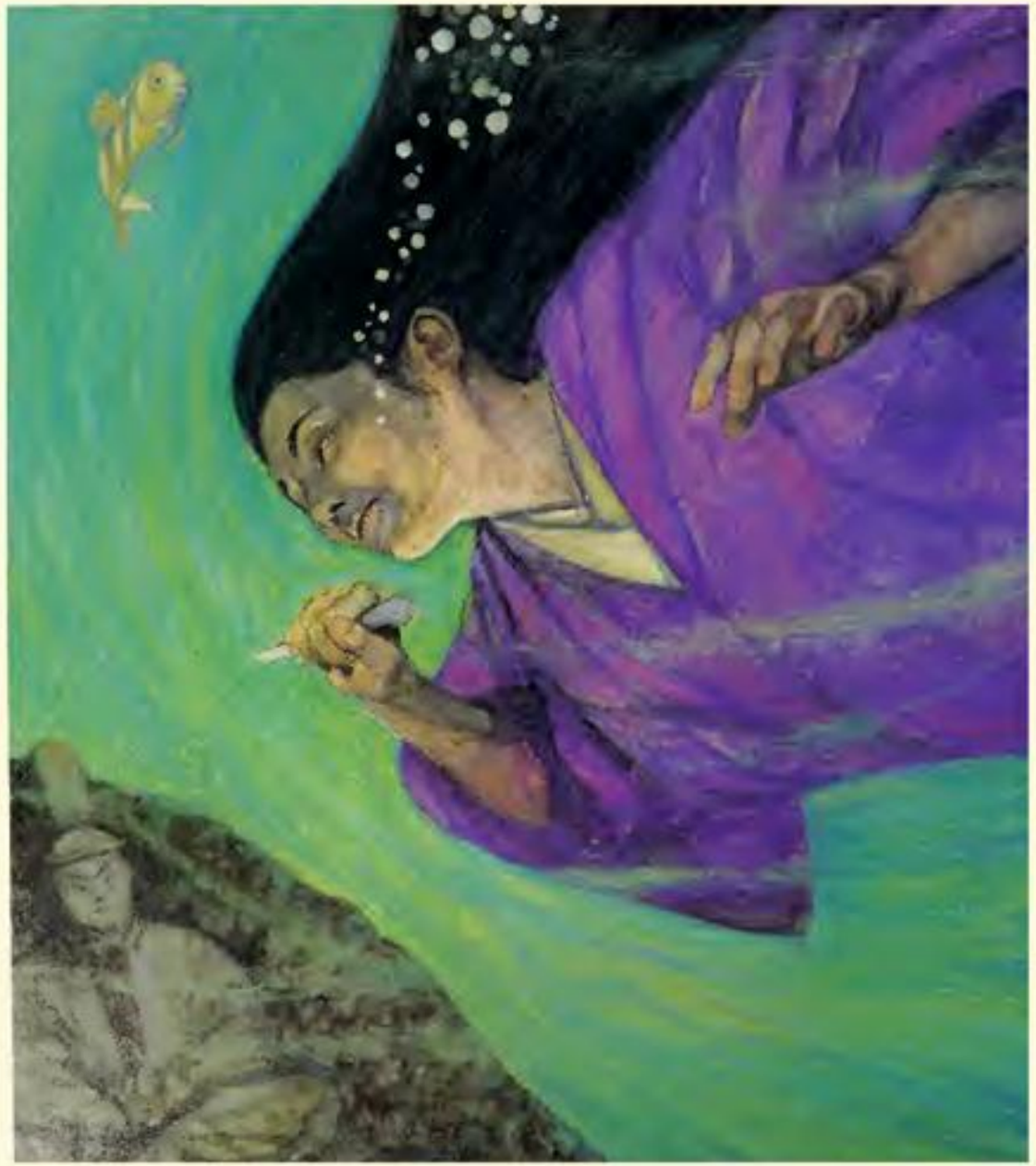

वह पानी के अंदर, और अंदर तैरती गई. वह एक गुफा के अँधेरे मुँह तक पहुँच गई जिसके आसपास चमकदार एबालोन, घोंघे, सीप और मोती थे. उनके प्रकाश में उसने एक छोटे से आदमी को बैठे पाया. लेकिन जब तैर कर वह उसके निकट आई तो उसने देखा कि वह उस सम्राट की लकड़ी की मूर्ति थी जिसने उसके पिता को निर्वासित किया था.

अचानक चमकदार, सफेद रोशनी खौलती हुई गुफा से बाहर आई और टोकोयो ने एक भयंकर प्राणी को देखा. वह प्राणी सांप की तरह कुलबुला रहा था . उसने अपनी कुंडली खोली. सांप बहुत लंबा था, उसकी पीठ पर सख्त, चमकते हुए शल्क थे, हालाँकि उसका निचला भाग नर्म और असुरक्षित था. सांप की आँखे दहक रही थीं और वह सीधा लड़की की ओर आया, कनखजूरे के समान उसकी सैंकड़ों टाँगे उसे आगे धकेल रही थीं.

लड़की जान गई कि यही दुष्ट पिशाच था और वह उसे अपना अगला शिकार समझ रहा था. सांप तेज़ी से आगे आ रहा था. उसके जबड़े पूरे खुले हुए थे लेकिन टोकोयो ने अंतिम क्षण तक प्रतीक्षा की और फिर वह फुर्ती से एक ओर घूम गई. उसने कटार से वार कर के उसकी दायीं आँख निकल दी. घायल सांप भौंचक्का हो गया और झट से अपनी गुफा के अंदर वापस चला गया. ताज़ा हवा में साँस लेने के लिए टोकोयो तैर कर पानी से बाहर आ गई.

उसने अपने फेफड़ों को हवा से भरा ही था कि धमाके के साथ सांप लहरों से बाहर उछला. गरजता हुआ वह लड़की पर झपटा. लेकिन टोकोयो ने गहरे पानी में डुबकी लगा दी और उसके घातक दांतों से बच निकली.

लड़की पानी में घूमती गई और सांप के हमले से बाल-बाल बचती रही. जो ज़ख्म उसने सांप को दिया था उससे वह धीमा पड़ गया था.

हवा के लिए हाँफते हुए टोकोयो पानी से फिर बाहर आई, और तुरंत ही पानी में डुबकी लगा कर सांप से दूर चली गई जो उसके बिलकुल निकट आ चुका था. वह फिर झटपट घूमी और सांप पर उस ओर से हमला किया जिस ओर उसकी आँख फूट चुकी थी. इस बार उसने सांप के पेट के नाज़ुक भाग से उसके दिल पर वार किया.

कुंडली मारते और खोलते, घायल सांप पानी में डूबता गया. अपनी गुफा के मुँह के निकट जाकर वह गिरा और उसकी मृत्यु हो गई. कठिन प्रयास के बाद टोकोयो उस दैत्य के शव को खींच कर सागर से बाहर तट पर ले आई. पादरी और लड़की आश्चर्यचकित होकर उसे देख रहे थे.

फिर टोकोयो ने जापान के सम्राट की लकड़ी की मूर्ति पानी से बाहर निकाली और उसे सुखाने के लिए एक चट्टान पर रख दिया. फिर इन घटनाओं के बारे में सबको बताने के लिए पादरी और लड़की और टोकोयो पास के गाँव गये.

वहाँ उसके पिता ने टोकोयो को अपने गले लगाया.

“मेरी बेटी,” उसने कहा, “तुम्हारी निष्ठा और साहस देख कर मैं बहुत प्रसन्न हूँ. तुमने हमारे परिवार का सम्मान बड़ा दिया है.”

“मुझे अपने साथ रहने दीजिये और मैं प्रसन्नता से यहाँ रहूँगी,” लड़की ने कहा. “अगर हम घर नहीं जा सकते तो हम यहीं अपना घर बनायेंगे.”

उन्हें शीघ्र ही पता चला कि जिस लकड़ी की मूर्ति को टोकोयो ने सागर से निकाला था, उसे उस आदमी ने बना कर शापित किया था जिसे वर्षों पहले सम्राट ने इस द्वीप पर निर्वासित किया था. जब मूर्ति को पानी में फेंका गया तो उसने समुद्री सांप को अपने पास आकर्षित कर लिया था जिससे दूर रह रहे सम्राट का मन विकार ग्रस्त हो गया था.

जिस पल लकड़ी की मूर्ति को पानी से बाहर निकाला गया उसी पल सम्राट का मन स्वस्थ हो गया. जब उन्हें पता चला कि टोकोयो ने क्या किया था, उन्होंने समुराई और उसकी बहादुर बेटी को वापस लौटने का आदेश दिया. सम्राट ने उन्हें बहुत सम्मानित किया. घर लौट कर दोनों ने जीवनभर शांति और समृद्धि का आंनद लिया.